प्रेस विज्ञप्ति

जगदलपुर। स्थानीय आदिवासी नवाचारों(इनोवेशन) और उनके स्थायी व्यवसायिक मॉडल के बारे में जानने और समझने के उद्देश्य से मंगलवार को शहीद महेंद्र कर्मा विश्वविद्यालय के मानव विज्ञान एवं जनजातीय अध्ययनशाला एवं ग्रामीण प्रोद्यौगिकी अध्ययनशाला द्वारा एक्सपोजर विजिट आयोजित किया गया। इस अवसर पर विभिन्न अध्ययनशालाओं के स्नातक और स्नातकोत्तर कक्षाओं के 51 विद्यार्थियों ने विभिन्न कला केंद्रों में जाकर बांस कला, डोकरा आर्ट और आयरन आर्ट की जानकारी प्राप्त की। सर्वप्रथम विद्यार्थियों की टीम भारतीय जनजातीय सहकारी विपणन विकास संघ(ट्रायफेड) द्वारा जगदलपुर में संचालित ट्राइब्स इंडिया आउटलेट के कार्य का अवलोकन किया। इस दौरान वरिष्ठ लेखाकार महेश्वर भगत, एवं चेन सिंह भगत ने विनिर्माण से लेकर बिक्री तक की पूरी प्रक्रिया की विस्तृत जानकारी दी। विद्यार्थियों ने स्टेप बाय स्टेप पार्टिसिपेशन और आदिवासी समुदाय के लिए आर्थिक अवसर बनाने में ट्राइफेड की भूमिका की जानकारी प्राप्त की। ट्रायफेड आदिवासी समुदाय को सशक्त बनाने के लिए कई ईनिशिएटिव कार्य कर रहा है। इसके बाद विद्यार्थियों की टीम जगदलपुर स्थित प. दीनदयाल उपाध्याय कला केन्द्र का भ्रमण किया। जहां छात्र-छात्राओं नें विभिन्न प्रकार की कलाकृतियों और जूट के बैग, बांस के पर्स, ऑफिस बैग, लैपटॉप बैग एवं दरी बनाने की प्रकिया को देखा। कला केन्द्र के प्रमुख उमेश राये्ेकवार ने बताया कि इस केन्द्र की स्थापना 1981 में की गई। पूर्व में यह केन्द्र बांस कला केन्द्र के नाम से प्रचलित था। वर्तमान में आस-पास की महिलाएं अपने घरों का काम खत्म करके इस कला केन्द्र में आकर विभिन्न प्रकार की आकृतियों का निमार्ण करती हैं। इस कला केन्द्र में लगभग 50 से 60 महिलाएं रोजगार प्राप्त कर रही है। विभागाध्यक्ष प्रो. स्वपन कुमार कोले ने बताया कि आईआईसी क्वार्टर तीन के एक्टिविटी के तहत जनजातीय कला एवं संस्कृति के विभिन्न रूपों को समझने एवं उसमें इनोवेशन व स्टार्टअप की संभावना तलाशने के लिए कला केंद्र एक्सपोजर विजिट का आयोजन किया जा रहा है। ताकि विद्यार्थी नए इनोवेशन और उद्यमिता के लिए प्रेरित हो सकें। इस आयोजन में सह-प्राध्यापक डॉ. सुकृता तिर्की, अतिथि व्याख्याता डॉ. शारदा देवांगन एवं डॉ. दुर्गेश डिक्सेना ने विद्यार्थियों को मार्गदर्शित किया।